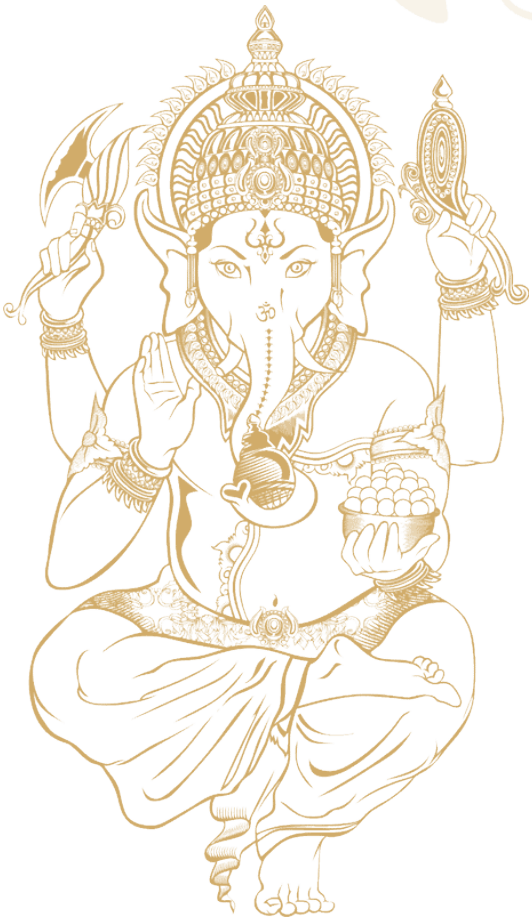

Mr.anjan

09 Feb 2001

07:00 AM

Deoghar

Model: Web-MyKundli

Order No: 119951601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**09/02/2001**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**07:00:00 घंटे**
इष्ट	01:36:47 घटी
स्थान	**Deoghar**
राज्य	Jharkhand
देश	India

अक्षांश	24:31:00 उत्तर
रेखांश	86:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:16:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:16:48 घंटे
वेलान्तर	-00:14:15 घंटे
साम्पातिक काल	16:33:40 घंटे
सूर्योदय	06:21:17 घंटे
सूर्यास्त	17:33:50 घंटे
दिनमान	11:12:33 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	26:29:34 मकर
लग्न के अंश	07:25:16 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**मघा - 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	शोभन
करण	कौलव
गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मू-मुकेश
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1922	माघ	20
पंजाबी	संवत : 2057	माघ	28
बंगाली	सन् : 1407	माघ	26
तमिल	संवत : 2057	थई	27
केरल	कोल्लम : 1176	मकरम	27
नेपाली	संवत : 2057	माघ	27
चैत्रादि	संवत : 2057	फाल्गुन	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2057	माघ	कृष्ण 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 08:56:43
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 16:29:07 घंटे
जन्म योग _____: मघा
सूर्योदय कालीन योग ____: शोभन
योग समाप्ति काल _____: 11:11:44 घंटे
जन्म योग _____: शोभन
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 08:56:43 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 28:56:27
भभोग _____: 52:39:16
भोग्य दशा काल _____: केतु 3 वर्ष 1 मा 22 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

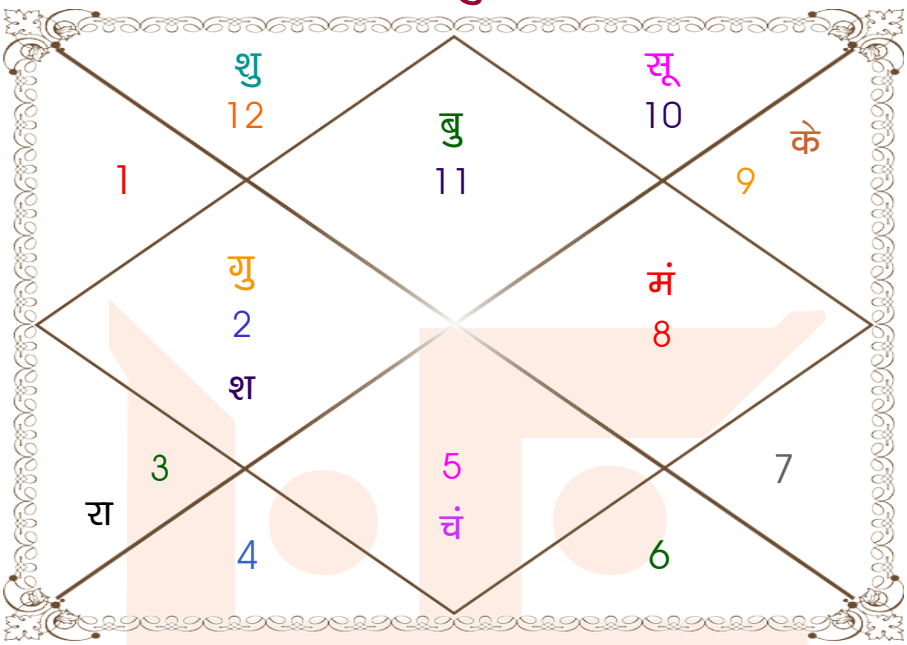

चन्द्र कुंडली

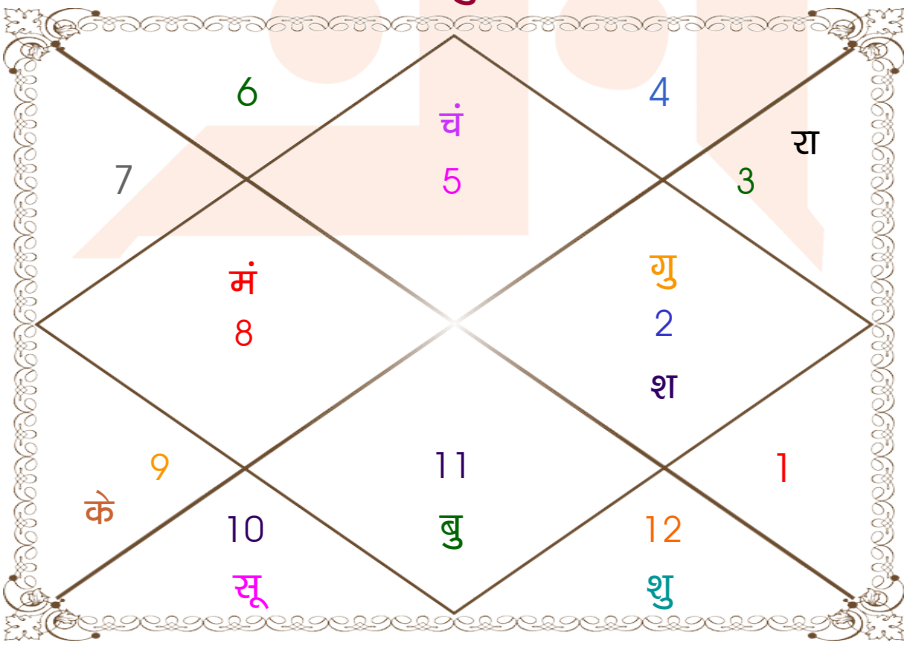

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

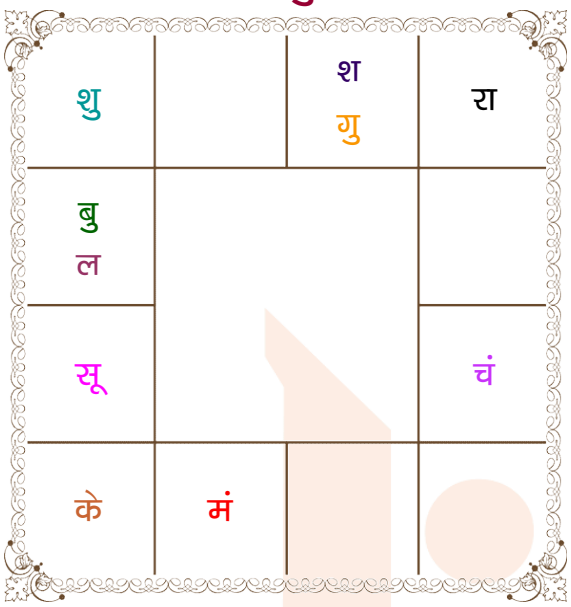

लग्न कुंडली

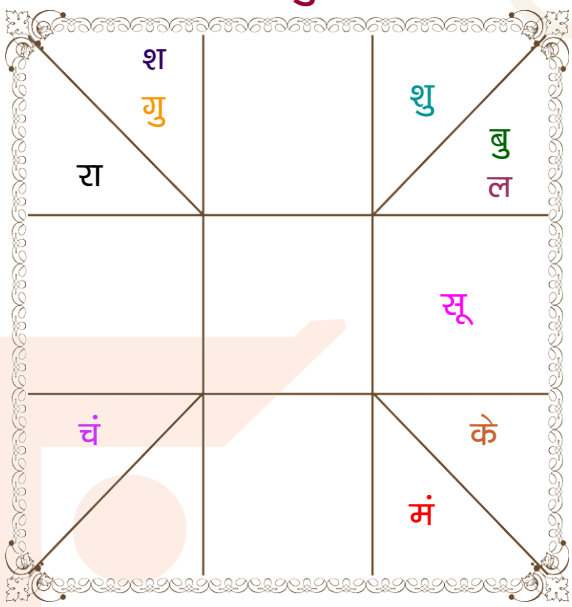

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 1मा 22दि

केतु

09/02/2001

04/04/2117

केतु	02/04/2004
शुक्र	02/04/2024
सूर्य	03/04/2030
चन्द्र	02/04/2040
मंगल	03/04/2047
राहु	03/04/2065
गुरु	03/04/2081
शनि	03/04/2100
बुध	04/04/2117

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 2मा 28दि

पिंगला

10/05/2025

10/05/2027

पिंगला	19/06/2025
धान्या	19/08/2025
भ्रामरी	08/11/2025
भद्रिका	18/02/2026
उल्का	19/06/2026
सिद्धा	09/11/2026
संकटा	20/04/2027
मंगला	10/05/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	07:25:16	461:15:47	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	---
सूर्य			मक	26:29:34	01:00:43	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	07:20:38	15:11:30	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	03:04:16	00:32:07	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	स्वराशि
बुध	व	अ	कुंभ	04:36:37	00:50:56	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	सम राशि
गुरु			वृष	07:41:12	00:02:58	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	11:16:38	00:46:31	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	उच्च राशि
शनि			वृष	00:24:17	00:01:41	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	मित्र राशि
राहु	व		मिथु	21:13:48	00:04:37	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	उच्च राशि
केतु	व		धनु	21:13:48	00:04:37	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	उच्च राशि
हर्ष			मक	26:55:23	00:03:29	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
नेप			मक	12:54:56	00:02:14	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	---
प्लूटो			वृश्चि	21:01:32	00:01:14	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
दशम भाव			वृश्चि	16:10:52	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:52:06

लग्न-चलित

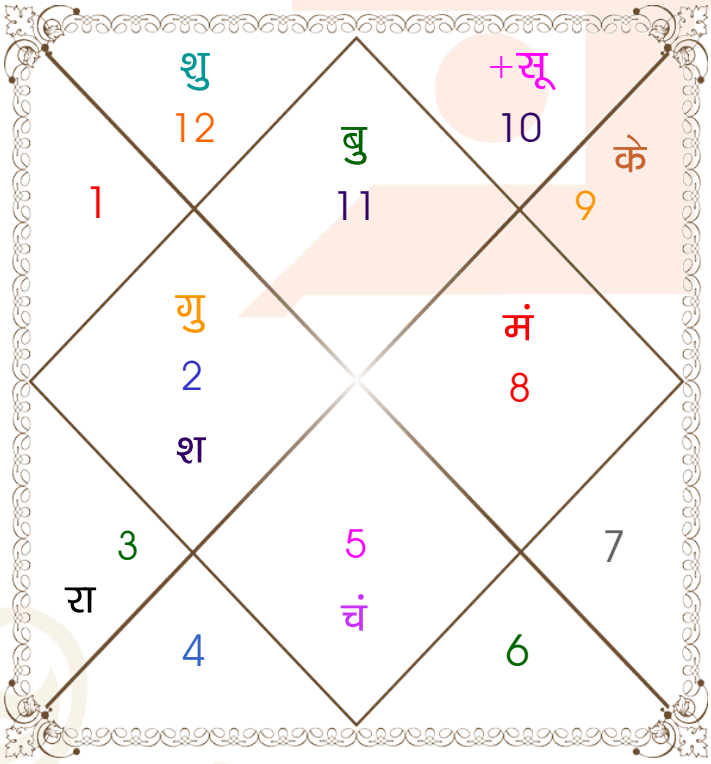

चन्द्र कुंडली

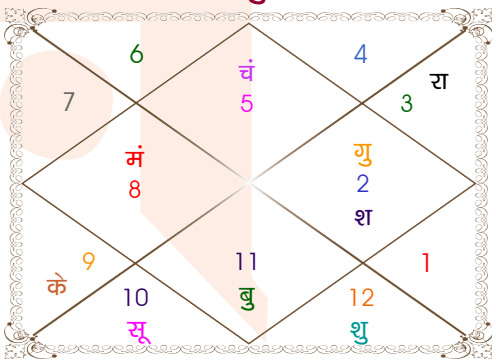

नवमांश कुंडली

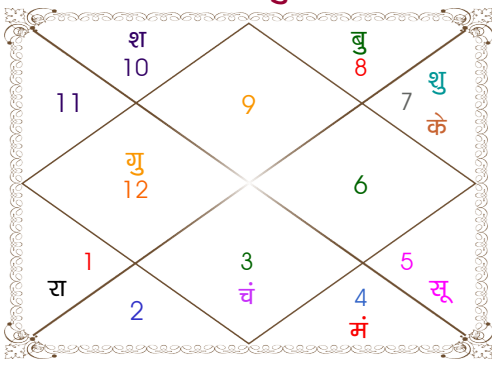

Marg Darshan jyotish kendra

Jora kothi shiv mandir karnibagh B.Deoghar Jharkhand 814143

9955755576/8002006599

ashutoshpandey698@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	23:52:52	कुम्भ	07:25:16
2	कुम्भ	23:52:52	मीन	10:20:28
3	मीन	26:48:04	मेष	13:15:40
4	मेष	29:43:16	वृष	16:10:52
5	वृष	29:43:16	मिथुन	13:15:40
6	मिथुन	26:48:04	कर्क	10:20:28
7	कर्क	23:52:52	सिंह	07:25:16
8	सिंह	23:52:52	कन्या	10:20:28
9	कन्या	26:48:04	तुला	13:15:40
10	तुला	29:43:16	वृश्चिक	16:10:52
11	वृश्चिक	29:43:16	धनु	13:15:40
12	धनु	26:48:04	मकर	10:20:28

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	07:25:16
2	मीन	16:40:09
3	मेष	19:28:50
4	वृष	16:10:52
5	मिथुन	10:22:33
6	कर्क	05:56:02
7	सिंह	07:25:16
8	कन्या	16:40:09
9	तुला	19:28:50
10	वृश्चिक	16:10:52
11	धनु	10:22:33
12	मकर	05:56:02

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

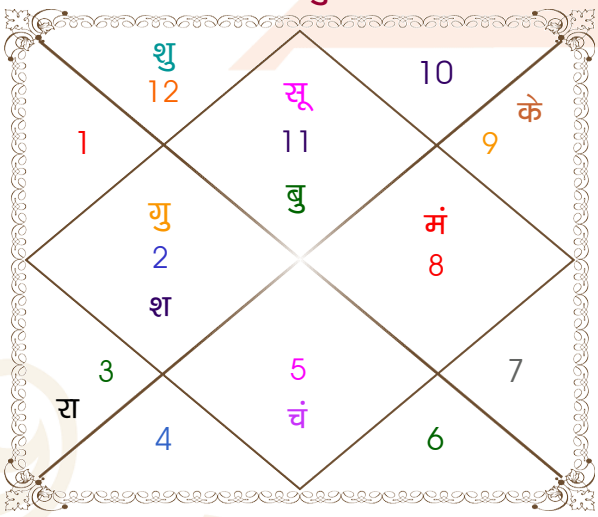

भाव कुंडली

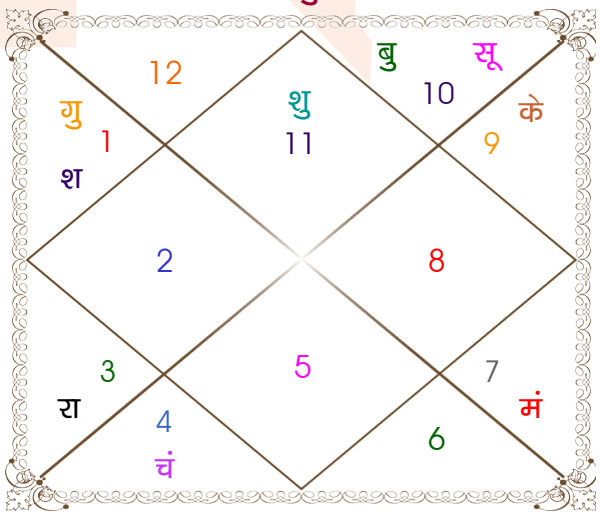

Marg Darshan jyotish kendra
Jora kothi shiv mandir karnibagh B.Deoghar Jharkhand 814143
9955755576/8002006599
ashutoshpandey698@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 1 मास 22 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
09/02/2001		02/04/2004		02/04/2024		03/04/2030		02/04/2040	
02/04/2004		02/04/2024		03/04/2030		02/04/2040		03/04/2047	
	00/00/0000	शुक्र	03/08/2007	सूर्य	21/07/2024	चंद्र	01/02/2031	मंगल	29/08/2040
	00/00/0000	सूर्य	02/08/2008	चंद्र	19/01/2025	मंगल	02/09/2031	राहु	17/09/2041
	00/00/0000	चंद्र	03/04/2010	मंगल	27/05/2025	राहु	03/03/2033	गुरु	24/08/2042
	00/00/0000	मंगल	03/06/2011	राहु	21/04/2026	गुरु	03/07/2034	शनि	03/10/2043
	09/02/2001	राहु	03/06/2014	गुरु	07/02/2027	शनि	01/02/2036	बुध	29/09/2044
राहु	21/03/2001	गुरु	01/02/2017	शनि	20/01/2028	बुध	03/07/2037	केतु	25/02/2045
गुरु	25/02/2002	शनि	02/04/2020	बुध	26/11/2028	केतु	01/02/2038	शुक्र	27/04/2046
शनि	06/04/2003	बुध	01/02/2023	केतु	03/04/2029	शुक्र	03/10/2039	सूर्य	02/09/2046
बुध	02/04/2004	केतु	02/04/2024	शुक्र	03/04/2030	सूर्य	02/04/2040	चंद्र	03/04/2047

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
03/04/2047		03/04/2065		03/04/2081		03/04/2100		04/04/2117	
03/04/2065		03/04/2081		03/04/2100		04/04/2117		00/00/0000	
राहु	14/12/2049	गुरु	22/05/2067	शनि	05/04/2084	बुध	31/08/2102	केतु	31/08/2117
गुरु	09/05/2052	शनि	02/12/2069	बुध	14/12/2086	केतु	28/08/2103	शुक्र	31/10/2118
शनि	16/03/2055	बुध	09/03/2072	केतु	23/01/2088	शुक्र	28/06/2106	सूर्य	08/03/2119
बुध	02/10/2057	केतु	13/02/2073	शुक्र	25/03/2091	सूर्य	04/05/2107	चंद्र	07/10/2119
केतु	21/10/2058	शुक्र	15/10/2075	सूर्य	06/03/2092	चंद्र	03/10/2108	मंगल	04/03/2120
शुक्र	20/10/2061	सूर्य	02/08/2076	चंद्र	05/10/2093	मंगल	30/09/2109	राहु	10/02/2121
सूर्य	14/09/2062	चंद्र	02/12/2077	मंगल	14/11/2094	राहु	19/04/2112		00/00/0000
चंद्र	15/03/2064	मंगल	08/11/2078	राहु	20/09/2097	गुरु	25/07/2114		00/00/0000
मंगल	03/04/2065	राहु	03/04/2081	गुरु	03/04/2100	शनि	04/04/2117		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 1 मा 25 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
27/05/2025		21/04/2026		07/02/2027		20/01/2028		26/11/2028	
21/04/2026		07/02/2027		20/01/2028		26/11/2028		03/04/2029	
राहु	16/07/2025	गुरु	30/05/2026	शनि	03/04/2027	बुध	04/03/2028	केतु	03/12/2028
गुरु	28/08/2025	शनि	15/07/2026	बुध	22/05/2027	केतु	22/03/2028	शुक्र	24/12/2028
शनि	20/10/2025	बुध	26/08/2026	केतु	12/06/2027	शुक्र	13/05/2028	सूर्य	31/12/2028
बुध	05/12/2025	केतु	12/09/2026	शुक्र	08/08/2027	सूर्य	29/05/2028	चंद्र	11/01/2029
केतु	24/12/2025	शुक्र	30/10/2026	सूर्य	26/08/2027	चंद्र	23/06/2028	मंगल	18/01/2029
शुक्र	17/02/2026	सूर्य	14/11/2026	चंद्र	24/09/2027	मंगल	12/07/2028	राहु	06/02/2029
सूर्य	05/03/2026	चंद्र	08/12/2026	मंगल	14/10/2027	राहु	27/08/2028	गुरु	23/02/2029
चंद्र	02/04/2026	मंगल	25/12/2026	राहु	05/12/2027	गुरु	08/10/2028	शनि	15/03/2029
मंगल	21/04/2026	राहु	07/02/2027	गुरु	20/01/2028	शनि	26/11/2028	बुध	03/04/2029

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
03/04/2029		03/04/2030		01/02/2031		02/09/2031		03/03/2033	
03/04/2030		01/02/2031		02/09/2031		03/03/2033		03/07/2034	
शुक्र	02/06/2029	चंद्र	28/04/2030	मंगल	14/02/2031	राहु	23/11/2031	गुरु	07/05/2033
सूर्य	21/06/2029	मंगल	16/05/2030	राहु	18/03/2031	गुरु	04/02/2032	शनि	23/07/2033
चंद्र	21/07/2029	राहु	01/07/2030	गुरु	15/04/2031	शनि	01/05/2032	बुध	30/09/2033
मंगल	11/08/2029	गुरु	10/08/2030	शनि	19/05/2031	बुध	18/07/2032	केतु	29/10/2033
राहु	05/10/2029	शनि	27/09/2030	बुध	18/06/2031	केतु	19/08/2032	शुक्र	18/01/2034
गुरु	23/11/2029	बुध	09/11/2030	केतु	30/06/2031	शुक्र	18/11/2032	सूर्य	11/02/2034
शनि	20/01/2030	केतु	27/11/2030	शुक्र	05/08/2031	सूर्य	15/12/2032	चंद्र	24/03/2034
बुध	12/03/2030	शुक्र	17/01/2031	सूर्य	15/08/2031	चंद्र	30/01/2033	मंगल	21/04/2034
केतु	03/04/2030	सूर्य	01/02/2031	चंद्र	02/09/2031	मंगल	03/03/2033	राहु	03/07/2034

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
03/07/2034		01/02/2036		03/07/2037		01/02/2038		03/10/2039	
01/02/2036		03/07/2037		01/02/2038		03/10/2039		02/04/2040	
शनि	03/10/2034	बुध	15/04/2036	केतु	15/07/2037	शुक्र	13/05/2038	सूर्य	12/10/2039
बुध	24/12/2034	केतु	15/05/2036	शुक्र	20/08/2037	सूर्य	13/06/2038	चंद्र	27/10/2039
केतु	26/01/2035	शुक्र	09/08/2036	सूर्य	30/08/2037	चंद्र	03/08/2038	मंगल	07/11/2039
शुक्र	03/05/2035	सूर्य	04/09/2036	चंद्र	17/09/2037	मंगल	07/09/2038	राहु	04/12/2039
सूर्य	01/06/2035	चंद्र	17/10/2036	मंगल	30/09/2037	राहु	07/12/2038	गुरु	28/12/2039
चंद्र	19/07/2035	मंगल	16/11/2036	राहु	01/11/2037	गुरु	27/02/2039	शनि	26/01/2040
मंगल	22/08/2035	राहु	02/02/2037	गुरु	29/11/2037	शनि	03/06/2039	बुध	21/02/2040
राहु	16/11/2035	गुरु	12/04/2037	शनि	02/01/2038	बुध	28/08/2039	केतु	03/03/2040
गुरु	01/02/2036	शनि	03/07/2037	बुध	01/02/2038	केतु	03/10/2039	शुक्र	02/04/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 5
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	91%	धन, सुख, भाग्योदय
गोमेद	राहु	88%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	80%	सुख, कम खर्च, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	76%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	73%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	72%	धनार्जन, सुख
पुखराज	गुरु	70%	सुख, धनार्जन, धन
माणिक्य	सूर्य	16%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	9%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग

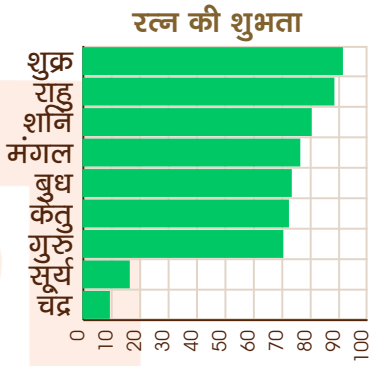

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	02/04/2004	0%	0%	82%	73%	70%	97%	67%	75%	84%
शुक्र	02/04/2024	0%	0%	76%	80%	70%	100%	86%	94%	78%
सूर्य	03/04/2030	41%	22%	82%	73%	77%	78%	67%	75%	59%
चंद्र	02/04/2040	28%	34%	76%	80%	70%	91%	80%	75%	59%
मंगल	03/04/2047	28%	22%	89%	61%	77%	91%	80%	75%	78%
राहु	03/04/2065	0%	0%	64%	73%	70%	97%	86%	100%	59%
गुरु	03/04/2081	28%	22%	82%	61%	83%	78%	80%	88%	72%
शनि	03/04/2100	0%	0%	64%	80%	70%	97%	92%	94%	59%
बुध	04/04/2117	28%	0%	76%	86%	70%	97%	80%	88%	72%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली से चतुर्थ भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। लेकिन शास्त्रानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो जाता है इसलिए यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा इसके शुभ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में अधिकांश रूप से सुखोपभोग की सामग्री से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

ऐसे मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य हो सकता है परन्तु इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी तथा विवाह सुखद वातावरण में सम्पन्न हो जाएगा। विवाहोपरान्त अपनी पत्नी से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य भी सामान्यतया अच्छा ही रहेगा जिससे कोई अनावश्यक व्यवधान या समस्या दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न नहीं होगी।

चन्द्र कुंडली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप सम्पत्ति या जायदाद को भी प्राप्त करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव रहेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य में पूर्ण उन्नति करने में सफल रहेंगे। समाज में मान सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि आपकी आय साधनों में नित्य उन्नति दायक रहेगी। जिसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहेगा। अतः सभी प्रकार से सुख सम्पन्न रहकर आप का जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या किसी ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ करेंगे तो आप जीवन में भाग्यशाली पुरुष होकर समस्त भौतिक सुख संसाधनों धन वैभव तथा मान सम्मान एवं कीर्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके परस्पर संबंधों मे भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा तथा किसी भी प्रकार अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न नहीं होगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की चन्द्र कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में ही न हो क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आप सुख संसाधनों को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करेंगे जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होगा फलतः इससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। अन्य भावों में मंगल रहने से उसका प्रभाव शुभ रहेगा जिससे जीवन में अनावश्यक कष्ट तथा परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। इससे आपका दाम्पत्य जीवन शान्त तथा सुखी रहेगा एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना सांसारिक, सामाजिक तथा परिवारिक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक निर्णय करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप

हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यो में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(02/04/2024 - 03/04/2030)

सूर्य की महादशा 02/04/2024 को आरंभ और 03/04/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वादश स्थान में अवस्थित है। सूर्य दर्प, आत्मा, सात्विक स्वभाव तथा का चेतनता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वादश भाव मोक्ष, व्यय, यात्रा तथा धार्मिक विचारों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपकी धर्म के प्रति प्रवृत्ति होगी, आप यात्राओं पर जाएंगे और आपको शक्ति और प्रभुत्व की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। केवल आपकी आँखों को सावधानी की आवश्यकता है। आँख की पीड़ा और कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। अन्यथा आपका स्वास्थ्य और जीवन शक्ति उत्तम होंगे।

अर्थ :

आपका व्यय होगा, किन्तु फलदायी उद्देश्यों के लिये होगा। आपको विदेशी स्रोतों से भी धन की प्राप्ति होगी। षष्ठम भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण शत्रुओं, प्रतिस्पर्धियों और नौक्री से लाभ हो सकता है।

व्यवसाय :

आप दूसरों की सेवा कर उनसे मान्यता प्राप्त करेंगे। कुछ उतार-चढ़ाव की सम्भावना है, किन्तु कुल मिलाकर आप अपनी जीवन वृत्ति में अच्छा करेगे। आपको सरकार तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। विदेश प्रवास अथवा विदेश में जीवन-वृत्ति भी हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सहकर्मियों और साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपके सम्बन्ध उनके साथ मित्रवत् होंगे। आप इस दशा में अनुबन्ध-पत्र, करारनामा आदि पर हस्ताक्षर कर सकते हैं जिनका संबंध विदेश से हो सकता है। आप सरकारी, पशासनिक आदि कार्यों में सफल होंगे। तकनीकी तथा विज्ञान-सम्बन्धी सेवाएं लाभदायक होंगी। आप रत्नों, सोने, संगमरमर आदि का व्यापार कर सकते हैं। आप आयात निर्यात का व्यापार भी कर सकते हैं जिसमें कुछ यात्राएं होंगी।

परिवार :

कुछ दिनों के लिये आप अपने बच्चों से दूर जा सकते हैं। आपको उनसे सुख आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।, कार्य-क्षेत्र में स्थिति उनके अनुकूल रहेगी, धन की प्राप्ति होगी तथा शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपकी माता के लिये समय भाग्यशाली रहेगा और आपको उनसे धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके पिता की एक अचल सम्पत्ति होगी तथा सुख और धन की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का जीवन सफल रहेगा और बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ मिलेंगे।

शिक्षा :

योग में आपकी रूचि होगी और आप धार्मिक प्रवचन देंगे या उनका आयोजन करेंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(21/07/2024 - 19/01/2025)

आपकी सूर्य की महादशा 02/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 19/01/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य, धन, सम्मान और साख उत्तम रहेंगे। जाने माने संगठनों से आपकी भागीदारी रहेगी। व्यापार या ठेके आदि से धन का लाभ होगा। कोई दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा हो सकती है। विदेश में नाम कमाने की संभावना है। सत्ता या अधिकार की प्राप्ति हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलेगी। मुकदमें में जीत होगी।

वैवाहिक जीवन और गृहसुख उत्तम होंगे। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। विवाह से लाभ होगा अथवा विवाह किसी धनी परिवार में हो सकता है। आपके माता-पिता सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। पिता धन कमाएंगे और जायदाद प्राप्त करेंगे। उनसे आपको लाभ होगा। आपके भाई-बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा। माता के साथ आपके संबंध उत्तम रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सुस्ती, सर्दी-जुकाम, कार्यक्षमता में कमी आदि की शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को श्वेत वस्त्रों का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(19/01/2025 - 27/05/2025)

आपकी सूर्य की महादशा 02/04/2024 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 27/05/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। आप स्फूर्ति और उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे और प्रत्येक कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करेंगे। मकान का निर्माण कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी या साझेदार को पक्की नौकरी मिल सकती है या वे कोई वाहन खरीद सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदाताओं के लिए समय बहुत व्यस्त और शुभ रहेगा। सेवारत जातक भाग्यशाली रहेंगे। विरोधी आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपके पुत्र-पुत्रियों को स्पर्धा परीक्षा में सफलता मिलेगी। उनको स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना होगा। आपके पिता को उच्चपद प्राप्त होगा। माता को विरोधी परेशान कर सकते हैं। उन्हें उष्मा से संबंधित व्याधियों से सावधान रहना चाहिए। छोटे भाई-बहनों को जायदाद प्राप्त हो सकती है। बड़े भाई-बहनों का खर्च बढ़ेगा। व्यर्थ की कष्टप्रद यात्राएं हो सकती हैं। मामापक्ष के लोग सट्टेबाजी और मनोरंजन में समय व्यतीत कर सकते हैं।

आपको मामूली स्वास्थ्य समस्याएं जैसे गठिया, ज्वर और रक्त की खराबी आदि

कष्ट दे सकती हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ लाभकारी रहेगा।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(27/05/2025 - 21/04/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 02/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 27/05/2025 को प्रारंभ होकर 21/04/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपको धन की प्राप्ति होगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। खेलकूद और मनोरंजन में रुचि रहेगी। धनी बनेंगे। बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता होगी; समाज में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में उत्थान के अवसर आएंगे। आपके पिता के भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। छोटे-भाई-बहनों को धन लाभ होगा। उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। वे उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

आपके जीवनसाथी को धनलाभ होगा। उनकी इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा संतोषजनक रहेगी। आपके यहां संतान का जन्म हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्य में बाधाएं आ सकती हैं। व्यापारी अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ होगा।

हृदय और उदर के रोगों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिव जी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(21/04/2026 - 07/02/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 02/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 21/04/2026 को प्रारंभ होकर 07/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आप जायदाद खरीद सकते हैं या वर्तमान मकान आदि में परिवर्तन कर सकते हैं। माता-पिता से सुख और समर्थन मिलेंगे। उनके साथ संबंध उत्तम रहेंगे। वाहन सुख रहेगा। प्रोन्नति हो सकती है। शुभकार्यो पर खर्चे बढ़ सकते हैं। अध्यात्म में सफलता मिलेगी। अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार को प्रसिद्धि मिलेगी। वे अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, उनका जीवन सुखमय होगा। आपके पिता को अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। उनका मन अध्यात्म में लगेगा। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, उन्हें प्रसिद्धि और सुख प्राप्त होंगे। भाई-बहनों को धन मिलेगा, उत्तम नौकरी प्राप्त होगी, मातहतों का सहयोग मिलेगा। आपके बच्चों का मन पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य विषयों में लग सकता है।

सेवारत जातकों को लाभ मिलेगा। व्यापारियों को लाभ अधिक, खर्च कम रहेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर सर्दी, जुकाम आदि और शरीर के ऊपरी भाग में कष्ट हो सकता है। दुखों से बचाव के लिए केसर, हल्दी, चना और पीली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(07/02/2027 - 20/01/2028)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 07/02/2027 को प्रारंभ होगी और 20/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। माता-पिता से लाभ और सम्मान प्राप्त होंगे। जमीन-जायदाद से युक्त रहेंगे। सरकार से सहयोग मिलेगा। रोगनिरोधक क्षमता उत्तम होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। मामा या ममेरे भाइयों से लाभ होगा। उत्तम स्वास्थ्य, उच्चपद और लोकप्रियता के योग हैं।

आपके जीवनसाथी को लाभ होगा और कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। आपको ससुराल से लाभ होगा। माता की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और वे अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के लिए उच्चपद और रोगनिरोधक क्षमता का संकेत है। आपकी संतान को परीक्षा में उत्तम अंक लाने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। इस मामले में उनसे आपका विवाद हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कठोर परिश्रम और धन का योग है। परामर्शदाता सफलता और धन अर्जित करेंगे। व्यापारीगण उत्साह से भरपूर रहेंगे, लाभ कमाएंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(20/01/2028 - 26/11/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 02/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 20/01/2028 को प्रारंभ होकर 26/11/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और अधिकार प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी से सुख और आराम की प्राप्ति होगी। जमीन, जायदाद और पिता से लाभ मिलेगा। मामा पक्ष के लोग धनधान्य से परिपूर्ण होंगे। माता से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यापार या सट्टेबाजी से अच्छी आय संभव है। जीवनसाथी या साझेदार का साथ विचार विनिमय सकारात्मक रहेगा। लेखकों और विचारकों के लिए यह समय शुभ रहेगा। जीवन साथी को व्यवसाय, लेखन, पत्रलेखन से अच्छी आय हो सकती है। साझेदार को लाभ होगा।

आपके पिता को सट्टेबाजी या निवेश से धन मिलेगा। उन्हें संतान से सुख मिलेगा और उच्चपद मिल सकता है। माता को कार्यों में सफलता, धन का लाभ और शत्रुओं पर विजय

संभावित हैं।

छोटे भाई-बहनों को धन मिलेगा, बड़ों की लघु यात्राएं हो सकती हैं। संतान को उच्चशिक्षा के अवसर प्राप्त होंगे और वर्तमान शिक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी। जीवनस्तर पहले जैसा रहेगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्नायविक थकान से सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(26/11/2028 - 03/04/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 02/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/11/2028 को आरंभ होकर 03/04/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपका समय उत्तम रहेगा। सफलता, प्रोन्नति, भूमि क्रय, उच्चाधिकारियों से सहयोग और सम्मान प्राप्त होंगे। बहुमुखी व्यापार में सक्रिय होकर खूब धन कमा सकते हैं। सरकार और जनता से सम्मानित होंगे। मित्रों से सावधान रहें क्योंकि वे बहका सकते हैं। तंत्र-मंत्र में रुचि की संभावना है। जोखिम उठाने से बचें। संतान के कारण समस्या उत्पन्न हो सकती है। सामान्य स्थान और धर्मस्थल की यात्रा का संकेत है।

जीवनसाथी को निवेश, शोध और तकनीकी क्षेत्र से लाभ होगा। पिता को सहकर्मियों से सहयोग प्राप्त होगा। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे। आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी ; यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल का वातावरण उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारी संपन्न बनेंगे।

बायें कान, उदर और पैर के रोगों से बचाव करें। शनिवार और मंगलवार को उपवास रखें और शाम को हनुमानजी की पूजा करें। नमक न खायें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(03/04/2029 - 03/04/2030)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आपको विभिन्न माध्यमों से धन प्राप्त होगा। आप आभूषण और सुंदर वस्तुएं खरीदेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। भोग-विलास और आरामप्रदायक साधन प्राप्त

करेंगे। विवाह हो सकता है। जीवनसाथी से सुख और धन प्राप्त होंगे। व्यापार में लाभ होगा। साझेदार के माध्यम से या विरासत में अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ और सुख मिलेंगे। पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों का समय आनंदमय, समृद्ध रहेगा। जायदाद से युक्त रहेंगे। आपके बच्चे लोकप्रिय, सफल और प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सरकार से या उच्चाधिकारियों से लाभ होगा, यात्राएं होंगी और शत्रुओं पर विजय होगी। परामर्शदाताओं को उच्च पद, प्रसिद्धि और धन प्राप्त होंगे। व्यापारियों को लाभ, उच्च पद मिलेंगे।

नेत्र और श्वसन तंत्र की समस्याओं से सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।